INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 5.828 (SJIF 2022)

स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की मानसिक सजगता और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन

(Study of Correlation Between Mental Alertness and Academic Achievement of Graduate Level Students)

नितिन माहेश्वरी
एम. एड., नेट (शिक्षाशास्त्र)
असिस्टेंट प्रोफेसर,
लालाराम श्रीदेवी महाविद्यालय अतरौली, अलीगढ़

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/07.2022-99176227/IRJHIS2207018

सारांश :

इस अध्ययन का आधार यह निर्धारित करना था कि स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की मानसिक सजगता और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सह–सम्बन्ध की क्या भूमिका है? इस शोध अध्ययन के आधार पर यह पाया गया कि मानसिक सजगता व शैक्षिक उपलब्धि की दृष्टि से स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं के मध्य अन्तर नहीं है अर्थात मानसिक सजगता व शैक्षिक उपलब्धि पर लिंग के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इस तथ्य के आधार पर छात्र–छात्राओं की शिक्षा उसके उद्देश्यों, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों में कोई अन्तर करने की आवश्यकता नहीं है। छात्र–छात्राओं दोनों की ही मानसिक सजगता व शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने के लिए समान रूप से कदम उठाये जा सकते हैं। इसके लिए अध्यापकों द्वारा छात्र–छात्राओं की निरीक्षण शक्ति, तर्क शक्ति, निर्णय शक्ति को विकसित करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

***संकेत शब्द** : मानसिक सजगता, शैक्षिक उपलब्धि*

प्रस्तावना :

मानसिक सजगता का सम्बन्ध ज्ञानात्मक मानसिक प्रक्रियाओं से है। ये मानव मस्तिष्क की जटिल प्रक्रियाएँ हैं। मानसिक सजगता ही हर प्रकार के शिक्षण, तर्क व सृजनात्मक चिन्तन का आधार है अर्थात मानसिक सजगता एक महत्वपूर्ण एवं आवश्यक तत्व हैं। शैक्षिक उपलब्धि किसी छात्र द्वारा वार्षिक परीक्षा में प्राप्त किये गये अंक, उस छात्र की विद्यालय में उन्नति एवं पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के प्रदर्शन से सम्बन्धित है।

शोध का महत्व :

इस शोध अध्ययन के आधार पर शोधार्थी को स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की मानसिक सजगता और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध के बारे में जानकारी मिलती है इसके आधार पर शिक्षक को विषयवस्तु के सैद्वान्तिक पक्ष पर बल कम और उसके प्रयोगात्मक पक्ष पर अधिक बल देना चाहिए। इसके अतिरिक्त शिक्षक विभिन्न प्रकार की सहायक शिक्षण सामग्री का अधिकाधिक प्रयोग कर छात्रों की निरीक्षण शक्ति को विकसित कर सकते हैं। विद्यालयी कार्यक्रम मानसिक सजगता से सम्बन्धित होने चाहिए जिसमें सामाजिक समस्याएं, गणितीय तर्क तथा रचनात्मक समस्याएँ सम्मिलित होनी चाहिए, जिससे छात्र समस्या की जटिलता को पहचान सकें और विविध अनुभव प्राप्त कर सकें।

शोध समस्या :

"स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की मानसिक सजगता और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन"

अध्ययन के उद्देश्य :

- स्नातक स्तर के छात्र और छात्राओं की मानसिक सजगता का तुलनात्मक अध्ययन।
- स्नातक स्तर के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पनाएँ :

- स्नातक स्तर के छात्र और छात्राओं की मानसिक सजगता के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- स्नातक स्तर के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शोध अध्ययन का सीमांकन :

- अध्ययन हेतु केवल जिला अलीगढ़ के महाविद्यालयों के छात्र–छात्राओं को चुना गया है।
- अध्ययन हेतु केवल 100 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया है।
- अध्ययन हेतु केवल बी0एस0सी0 प्रथम वर्ष के छात्र–छात्राओं को चुना गया है।
- शैक्षिक उपलब्धि हेतु छात्र एवं छात्राओं के इण्टरमीडिएट परीक्षा के प्राप्तांकों को ही लिया है।

शोध विधि :

इस शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध न्यादर्श : इस शोध कार्य में शोधकर्ता द्वारा 100 छात्रों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है।

प्रतिचयन प्रविधि :

इस शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा यादृच्छिक प्रतिचयन प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण :–

इस शोध कार्य में शोधकर्ता द्वारा डॉ0 आर0पी श्रीवास्तव द्वारा निर्मित सामान्य मानसिक सजगता परीक्षण एवं शैक्षिक उपलब्धि के लिए कक्षा 12 की वार्षिक परीक्षा के अंको को लिया गया है।

सांख्किीय प्रविधि :–

मध्यमान मानक विचलन क्रांतिक अनुपात, सह–सम्बन्ध का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेशण एवं व्याख्या :–

उददेश्य 1–

छात्र एवं छात्राओं की मानसिक सजगता का तुलनात्मक अध्ययन

परिकल्पना –1

छात्र एवं छात्राओं की मानसिक सजगता के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

उपरोक्त उददेश्य की पूर्ति हेतु छात्र एवं छात्राओं की मानसिक सजगता के प्राप्तांकों से मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन की गणना की गई। तत्पश्चात दोनों के प्राप्त मानों के आधार पर क्रांतिक अनुपात निकाले गए जिसका विवरण निम्न तालिका संख्या 1 में प्रदर्शित है।

तालिका–1

छात्र एवं छात्राओं की मानसिक सजगता के मध्य अन्तर की सार्थकता

चर	लिंग	संख्या	मध्यमान विचलन	प्रमाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
मानसिक सजगता	लड़के	50	34.60	13.34	1.01	0.05 स्तर पर असार्थक
	लड़कियाँ	50	37.34	13.76		

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से यह विदित होता है कि छात्रों की मानसिक सजगता का मध्यमान 34.60 तथा प्रमाणिक विचलन 13.34 है जबकि छात्राओं की मानसिक सजगता का मध्यमान 37.34 तथा प्रमाणिक विचलन 13.76 है छात्र/छात्राओं की मानसिक सजगता का क्रान्तिक अनुपात 1.01 है जो 0.05 स्तर पर असार्थक है तालिका से स्पष्ट है कि मानसिक सजगता में कोई लिंग प्रभाव नहीं पाया गया। अतः उपरोक्त शून्य परिकल्पना "छात्र एवं छात्राओं की मानसिक सजगता के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है" स्वीकृत की जाती है।

उद्देश्य 2 – छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना –2 छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

उपरोक्त उद्देश्य की पूर्ति हेतु छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों से मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन की गणना की गई। तत्पश्चात दोनों के प्राप्त मानों के आधार पर क्रांतिक अनुपात निकाले गये जिसका विवरण निम्न तालिका संख्या 2 में प्रदर्शित है।

तालिका–2

छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अन्तर की सार्थकता

चर	लिंग	संख्या	मध्यमान विचलन	प्रमाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
मानसिक सजगता	लडके	50	298.65	36.74	1.91	0.05 स्तर पर असार्थक
	लड़कियाँ	50	315.16	48.82		

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से यह विदित होता है कि छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के अंकों का मध्यमान 298.65 तथा प्रमाणिक विचलन 36.74 है। जबकि छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के अंको का मध्यमान 315.16 तथा प्रमाणिक विचलन 48.82 है।

छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के अंको का क्रांतिक अनुपात 1.91 है जो विश्वश्नीयता के 0.05 स्तर पर असार्थक है।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर तो है परन्तु सार्थक नहीं है। छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है– स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष :

1 – छात्रों की मानसिक सजगता का मध्यमान 34.60 तथा प्रमाणिक विचलन 13.34 है। जबकि छात्राओं की मानसिक सजगता का मध्यमान 37.34 तथा प्रमाधिक विचलन 13.76 है छात्र–छात्राओं की मानसिक सजगता का क्रांतिक अनुपात 1.01 है जो 0.05 स्तर असार्थक है। इससे स्पष्ट है कि मानसिक सजगता में कोई लिंग प्रभाव नहीं पाया गया।

इसी आधार पर अध्ययन की प्रथम परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है।

2 – छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के अंको का मध्यमान 298.65 तथा प्रमाणिक विचलन 36.74 है जबकि छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के अंको का मध्यमान 315.16 प्रमाणिक विचलन 48.82 है। छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य क्रांतिक अनुपात 1.91 है जो 0.05 स्तर पर असार्थक है। अतः उक्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष निकलता है कि छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के अंको में अन्तर तो है परन्तु वह 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

इसी आधार पर अध्ययन की द्वितीय परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

पुस्तकें–

1 बोरिंग, ई. जी. , लैगफील्ड, एच. एस., एण्ड वेल्तु, एच. पी. "फाउण्डेशन्स ऑफ साईक्लौजी न्यूयार्क, बम्बई, एशिया पब्लिशिंग हाउस 1963"।

2 भार्गव, महेश चन्द, "आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण" छठा संस्करण 1985।

3 चार्लीज ई. स्किनर, "एजूकेशनल साइक्लौजी" फस्ट एडीशन, पृष्ठ 539।

4 गुप्ता, एस. पी. एवं गुप्ता, अलका, "उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान" इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन, (2014) पृष्ठ 3–4।

5 शर्मा, आर.ए., "शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध विधियाँ" मेरठ, आर. लाल बुक डिपो (2013) पृष्ठ 567–571।

6 सिंह, अरूण कुमार, "मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ" दिल्ली, मोतीलाल बनारसी दास, (2014), पृष्ठ 414–415

7 सिंह, लाभ, "इसेन्शियल्स ऑफ स्टेटिस्टिक्स इन साइक्लौजी एण्ड एजूकेशन" : पार्ट–1 भार्गव बुक हाउसः 1975।

लघु भाोध पत्रिकाएं :

1 एशियन जनरल ऑफ साइक्लोजी एण्ड एजूकेशन, अप्रैल 1983 वोल्यूम 111 नं02, पृष्ठ 28–31।

2 जनरल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च 1960 वोल्यूम 62।

3 इण्डियन जनरल ऑफ साइक्लौजी 1964, वोल्यूम 39:191–195।